जनतांत्रिक चेतना परिवर्तन का द्योतक ।।

लोकतान्त्रिक व्यवस्था का दुरूपयोग कर कुछ सफेदपोश भले ही अपना हित साधने में कामयाब हो रहे हो परन्तु इस व्यवस्था में समाज एवं समाज के नीचले तबके अर्थात शोपित/पीडित वर्ग और देश की सेवा का भाव केन्द्रित हैं । जननायक चाहे वह किसी भी पार्टी का प्रतिनिधित्व करता हो पर उसकी अर्न्तरात्मा में देश और जन सेवा का भाव होता हैं। यह भाव जनतान्त्रिक चेतना का ही जीवन्त उदाहरण है,कुछ अपवाद हो सकते हैं ।जननायक के माध्यम से समाज के उच्च वर्ग से लेकर अतिनिम्न वर्ग जनतान्त्रिक चेतना का संचार होता हैं और इसी जनतान्त्रिक चेतना के सोधेपन की छांव में देश और समाज तरक्की के सोपान चढता है । जनतान्त्रिक चेतना के कारण आवाम में आत्म विश्वास बढा है ।जनतान्त्रिक चेतना का असर आज हर क्षेत्र में दिखाई पड रहा है चाहे सामाजिक हो ,आर्थिक हो या राजनीतिक।जातीय भेद की दीवारे गिराकर मानवीय सम्बन्धों में जो अपनापन का भाव जागा है वहह जनतन्त्र की देन है । जनतान्त्रिक चेतना से होकर ही दुनिया की सारी तरक्कियों का रास्ता गुजरता है । जात –पात की मजदूर दीवारों में टूटन ,सामन्तवादी व्यवस्था का नाश बहुजन हिताय बहुजन सुखाय के भाव का श्रेय जनतांत्रिक चेतना को ही जाता है ।

वर्तमान में राजनैतिज्ञ स्वार्थवस यह भावना आहत हुई है।इसके बाद भी जनतान्त्रिक चेतना सामाजिक परिवर्तन का कारण बन रही है ।जातीय वोट बैंक में टूटन,सवर्णो और अवर्णो के बीच रोटी – बेटी का रिश्ता जनतान्त्रिक चेतना कीी महान उपलब्धियों में गिना जाना चाहिये । जिस जातिवाद के अमानवीय भेद के कारण अश्पृश्यता जैसा व्यवहार होता था । आज निकटता आ रही है । सर्वसमानता एवं मानवता की बात होने लगी है ।जनतान्त्रिक चेतना सामाजिकं परिवर्तन के क्षेत्र में मील का पत्थर साबित हो रही है । जनतान्त्रिक चेतना का शंखनाद प्रिण्ट,इलेक्ट्रानिक मीडिया एवं साहित्य बखूबी कर रहे है परन्तु अभी बहुत कुछ करना शेप है । जनतान्त्रिक चेतना का प्रभाव गांव से लेकर शहर तक देखे जा सकते है । बांस और अधीनस्थों के बीच निकटता, मालिक मजदूरो के बीच सौहार्द पूण वातावरण एवं सामाजिक बुराईयों पर कुठराघात जनतान्त्रिक चेतना का ही प्रतिफल है । कुछ समय पूर्व जो लोग आपस में बैर भाव रखते थे वे अपने को बांटने का सुख भोग रहे हैं । मानवता को ही धर्म मानने लगे है । आत्मविश्वास और समझदारी से हर क्षेत्र में छोटे बडे साथ साथ चल रहे है ।

गांवों में आधुनिक सुविधायें प्राप्त हो रही है ।अस्पताल,कालेज/प्राद्यौगिक कालेज तक खुलने लगे है ।गांव गांव में सामुदायिक केन्द्रों का निर्माण आधुनिक कृपि यन्त्रों का उपयोग, छोटे बडे का एक साथ बैठना,छोटा परिवार सुखी परविार के भाव का उदय ,गरीबी उन्मूलन,बेरोजगारों को काम एवं बेरोजगारी भत्ता जनतान्त्रिक चेतना के कारण सम्भव हुआ है । जनतान्त्रिक चेतना का क्षेत्र बहुत विस्तुत हो गया है ।जरूरत है खुले एवं निश्पक्ष भाव से काम करने की तभी जनतन्त्र को मजबूत बनाया जा सकता है ।देश समाज के विकास को देखते हुए जनप्रतिनिधियों की जिम्मेदारी और बढ जाती है । देश और समाज को तरक्की के राह पर बहुत दूर तक जाना है अभी तो शुरूआती दौर है ।कई क्षेत्रो में हम बहुत पीछे है ।जरूरत है स्वार्थ से उपर उठकर काम करने की । जिन मनुप्यों का लोग मनुप्य नही समझते आज उन्हे समानता का एहसास होने लगा है पर अभी भी वे बहुत दूर है ।सच है जनतांत्रिक

चेतना परिवर्तन का द्योतक है।जनतान्त्रिक चेतना से हर उत्थान सम्भव है परन्तु हमें दृढ प्रतिज्ञवान होना होगा ।
नन्दलाल भारती